सलाम

मां तुम्हारी देह
27 अक्टूबर 2001 को
पंचतत्व में खो गयी थी
मां मुझे याद हो तुम
तुम्हारी याद दिल में बसी है ।
आज भी तुम्हारा एहसास
साथ साथ चलता है मेरे
बिल्कुल बरगद के छांव की तरह ।
दुख की बिजुड़ी जब कड़कती है
ओढा देती हो आंचल मेरी मां
अन्दाजा लग जाता है मुझे ,
तुम्हारे न होकर भी होने का ।
सुख–दुख में तुम्ही तो याद आती हो
तुम्हारी कमी कभी कभी बहुत रूलाती है ,
जब ओसारी में गौरैया,
जूठे बर्तन के फेंके पानी से
जूठन चून कर अपने,
बच्चो के मुंह में बारी–बारी से डालती है ।
तब तुम और तुम्हारा संघर्ष बहुत याद आता है
उभर आता है,
धुधली यादों में बसा मेरा बचपन भी
मां तुम भी उतर आती हो
परछाई स्वरूप मेरे सामने
और
रख देती हो सिर पर हाथ ।
कठिन फैसले की जब घड़ी आती है
तब तुम्हारी तस्वीर उभर आती है
जीवित हो जाती हो जैसे तुम
हृदय की गहराईयों में
राह बदल लेती है हर मुश्किले ।
मां तुम्हारे आशीश की छांव
फलफूल रहे है तुम्हारे अपने
सींच रहे हैं तुम्हारे सपने

और
रंग बदलती दुनिया मे, टिका हूं मैं भी ।
मां तेरे प्रति श्रध्दा ही जीवन का उत्थान है
यही श्रध्दा देती रहेगी हमें
तुम्हारी थपकियों का एहसास भी ।
मां तुम तो नही हो, देह रूप में
विश्वास है,
तुम मेरी धड़कन में बसी हो
हर माताओ के लिये ,
गर्व का दिन है मातृदिवस
आराधना का दिन है आज का,
मेरी दुनिया है मेरी मां स्वर्गीय समारी,
करते है वन्दना तुम्हारी
जीवनदायिनी पल पल याद आती है तुम्हारी
मरकर भी अमर है तेरा नाम
हे मां तुम्हे सलाम..... हे मां तुम्हे सलाम.....
नन्दलाल भारती